R.N. College Hajipur.
Geography dept.

हम्बोल्ट By:- Abhishek Kumar.
B.A-III

हम्बोल्ट के भूगोल में योगदान का वर्णन करें।—

(A) परिचय
(B) हम्बोल्ट का भूगोल के उद्विकास
(C) हम्बोल्ट की भौगोलिक कृतियाँ
(D) हम्बोल्ट का भूगोल के विधितंत्र में योगदान
(E) भूगोल की संकल्पनाओं के विकास में योगदान
(F) समीक्षा

(A) परिचय :-

भूगोल विषय के क्षेत्र में हम्बोल्ट के योगदान को आज भी सराहनीय है वह शास्त्रीय भूगोल एवं आधुनिक भूगोल का जन्मदाता कहा जाता है। उसने विज्ञान के अनेक शाखाओं में भी अपना योगदान दिया। अपने काल का अग्रणी विज्ञान भी माना जाता था। जर्मनी में आज भी उसे चिरस्मरणीय बनाने हेतु उसके नाम पर अनेक वैज्ञानिक संस्थायें स्थापित किये गये हैं।

(B) हम्बोल्ट का भूगोल के उद्‌विकास :-

भूगोल के उद्‌विकास

हेतु अपने जीवनकाल में अनेक यात्रायें की एवं अपने प्रेक्षणों से तथा अन्य वैज्ञानिकों के प्रेक्षणों के उल्लेखों से सामग्री एकत्रित करके विश्व का एक युक्तिसिद्ध वर्णन लिखा था।

↳ वनस्पति विज्ञान, भू-विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान शरीर रचना, शरीर क्रिया विज्ञान, इतिहास एवं भूगोल के अध्ययन किये।

↳ जर्मनी में कई वर्षों तक खनन भू-वैज्ञानिक का कार्य करता रहा इसे दक्षिणी जर्मनी का भ्रमण करने का अवसर मिला। 1829 में यूराल, रूस और साइबेरिया में अल्ताई पर्वतों की यात्रायें भी की थी।

↳ जार्ज फॉस्टर से मिलने के उपरांत इसको भ्रमण की प्रिय इच्छा ने क्रियात्मक रूप दे दिया। 1790 में पश्चिमी यूरोप 1799 में दक्षिणी अमेरिका से यात्रा आरंभ करते हुए उत्तरी अमेरिका पहुँचा पुनः वहाँ से वह फ्रांस पहुँचा और वहीं रहने लगा। इन यात्राओं में हम्बोल्ट ने भूविज्ञान प्रकृति विज्ञान, जीव-विज्ञान और मानवीय तथ्यों के प्रेक्षण किये। प्रथम बार समयमापी का उपयोग करके स्थान पर देशांतरों को निश्चित किया था और वायुदाबमापी की सहायता

के ऊँचाइयाँ निश्चित की थी।

- पेरिस में वह अपने पुस्तक के प्रकाशन से लेकर अध्ययन हेतु 20 वर्षों तक रहा। एवं अपने जीवन का अंतिम समय जर्मनी बर्लिन (1830) में वहाँ के राजदरबार में राजा के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में व्यतीत किया।
- अपनी प्रसिद्ध ग्रंथमाला "कॉसमॉस" अर्थात "विश्व का भौतिक वर्णन" को पाँच खंडों में प्रकाशित किया। इसका प्रकाशन 1845 से 1862 लगभग 17 वर्षों में पूरा हुआ।

(c) हम्बोल्ट की भौगोलिक कृतियाँ

- हम्बोल्ट का पहला भौगोलिक लेखन (1805-1835) में अयनवर्ती / उष्णकटिबंधीय विश्व का प्राकृतिक वर्णन का 30 खंडों में प्रकाशन हुआ जो हम्बोल्ट की प्राकृतिक विश्व की तस्वीर है।
- उसकी दूसरी भौगोलिक रचना "मध्य एशिया" जो दो खंडों में एवं पाँच खंडों में "विश्व का भूगोल" कॉसमॉस उसके भौगोलिक चिंतन एवं ज्ञान का परिणाम था।

Megazolid PLUS

(D) हम्बोल्ट का भूगोल के विधितंत्र में योगदान :-

भौगोलिक अध्ययन हेतु इन्होंने सात विधितंत्र का उपयोग किया जो कि निम्नवत् है –

(i) आनुभाविक विधि

(ii) तुलनात्मक विधि

(iii) पर्यवेक्षण की एकता

(iv) पर्यवेक्षण का समन्वय

(v) क्रमबद्ध विधि

(vi) प्रादेशिक विधि

(vii) मानचित्र रचना विधि

उपर्युक्त विधि द्वारा हम्बोल्ट ने अपना योगदान भूगोल के विधितंत्र में दिया।

(E) भूगोल के संकल्पनाओं के विकास में योगदान :-

हम्बोल्ट महोदय ने सात पक्षीय संकल्पनाओं का प्रतिपादन किया था जो भूगोल की प्रकृति को स्पष्ट करता है तथा जिसके आधार पर भूगोल का विकास होता आ रहा है जो निम्नप्रकार से अग्रलिखित है —

MegazoidPLUS

(i) प्रकृति की एकता

(ii) सांसारिक तत्वों की एकता

(iii) भूगोल संबंधों का अध्ययन है

(iv) सामान्य भूगोल का ही नाम भौतिक भूगोल है

(v) विश्व के स्थानिक वितरणों का विज्ञान

(vi) पृथ्वी की सतह का मानव के घर के रूप में अध्ययन

(vii) भूगोल के तत्वों की विषमांगता

(F) समीक्षा :-

Megazolid PLUS